प्रश्न-पेपर ५ | ता. २५-५-८७

'हैम सं.प्र.म.' पाठ १८ थी २३ | मार्क्स ४०

प्र.१ नीचेना प्रश्नोना उत्तर आपो। कोई पण - ६ | १५ मार्क्स

(१) प्रथमा एकवचननो स् (सि) प्रत्यय पर छतां थता फेरफारवाला नियमना मात्र नंबर लखी आशीत् प्रत्ययोना विषयोमां थता धातुना आदेश लखो ?

(२) पाठ. २० नि. ४ शा माटे ते जणावी 'पणुं' अर्थमां वपराता प्रत्ययो लखो।

(३) घणामां निर्धारवुं होय त्यारे कया प्रत्ययो कोने लागे छे ते सदृष्टांत जणावी अ (ट्) प्रत्यय पर छतां शुं फेरफार थाय छे ते जणावो ?

(४) कया - कया प्रत्ययों पर छतां वेट् धातुओमां इ आवती नथी ते जणावी २२मा पाठनो १३मो नियम लखो।

(५) धुट् व्यंजनादि प्रत्यय पर छतां धातुओमां थतां फेरफार लखी केटला स्वरादि प्रत्ययों पर छतां दीर्घ स्त्रीलिंग नाममां फेरफार थाय छे तेनी मात्र संख्या जणावो।

(६) अनिट् कारिकानो ५मो श्लोक लखी ज् कारांत मां आवतां संयुक्ताक्षर धातु केटला ते जणावी सेट् मां आवतां ह्रस्व स्वरांत धातु लखो।

(७) वेट् कारिकामां आवतां नामि स्वरवाला संयुक्ताक्षर लखी संख्यावाचकनी व्युत्पत्ति लखो।

प्र.२ (अ) नीचेना धातुना कर्त्तरि रूपो लखो। कोई पण-५ | ७½ मार्क्स

(१) अनु + इष् - ३ काल - २ पु. (२) उद् + जल्प् - १ पु.

(३) सम् + दो - ३ पु. (४) दुस् + कृ - ३ गण - ब.व.

(५) निर् + स्थि - ए.व. (६) उद् + शिस् - ए.व. ब.व.

(ब) नीचेना धातुना कर्मणि रूपो लखो। कोईपण ५ | ४ मार्क्स

(१) परि + सू - २ गण ३ पु. (२) अनु + दुष् - ३ पु.

(३) प्रति + ईक्ष् - १ पु. (४) उद् + लङ्घ - ए.व.

(५) दुस् + खण्ड् - २ पु.

प्र.३ (अ) नीचेना माटे धातु तथा शब्द पूर्ण माहिति साथे लखो। गमे ते १० | ७½ मार्क्स

(१) गमन (२) पायदल (३) बफारो (४) वळगवुं (५) जागवुं ते (६) विचारक

(७) होंशीयार (८) बळ (९) जोवुं (१०) देव (११) मेघ (१२) अवश्य थवानुं

(ब) नीचेना शब्दोना रूपो लखो। | ७½ मार्क्स

(१) वृद्ध - इयस् प्रत्यय - स्त्रीलिंग - ५ थी ८

(२) अन्य सर्वनाम क्विप् प्रत्यय - त्रणे लिंगे ५ थी ८

(३) प्रत्यच् - स्त्री लिंग १ थी ५

(४) हन्भू - ३ थी ८

(५) निशा - ३ थी ७

प्र. ५ (अ) नीचेनानी साधनिका करी अर्थ लखो । कोई पण - ५ — ४ मार्क्स

(१) निर्मोत्स्यन्ते (२) आनायिष्यति (३) निष्कल्स्यंध:

(४) उन्मोक्ष्यान्ते (५) दुरहनिष्यन्ते

(ब) नीचेनानी साधनिका करी अर्थ लखो । विग्रह थतो होय त्यां विग्रह करी साधनिका करो ।

(१) वर्षाभूणाम् (२) पथीषु (३) वृत्रघ्न: (४) एकतरत् (५) उदाञ्चे — ४ मार्क्स

प्र. ५ (अ) नीचेना रूपो लखो । — ७½ मार्क्स

(१) कृपालु - स्त्री. ए.व. (२) जन्मन् - ५ थी ४ (३) आयुस् - ५ थी ४

(४) चरम - ९ थी ५ (५) इदम् - पु. स्त्री. ए.व. ब.व.

(ब) नीचेनी खाली जग्या पूरो । कोई पण - १० — १० मार्क्स

(१) पाठ १३ नियम २ ना अपवादभूत नियम —— पाठनो —— मो छे ।

(२) —— प्रत्यांत नामो सर्वनाम छे

(३) तद्धित पर छतां —— मां रहेला —— अने —— नो लोप थाय छे ।

(४) —— अने —— प्रत्ययना दरेक वर्णो इत् छे ।

(५) —— प्रत्यय पर छतां —— के —— अंतवालु नाम पद थतुं नथी ।

(६) कनिष्ठा: नो विग्रह —— छे ।

(७) '७४ मुं पुस्तक' माटे —— शब्द तथा चोथी कन्या माटे —— शब्द छे ।

(८) पाठ २१ नियम १० मां आवतां दकारांत शब्दो —— छे ।

(९) —— प्रत्यय पर छतां —— ना —— नो ओ थाय छे ।

(१०) पाठ १५ नियम १५ न होत तो खोटुं रूप —— थात ।

(११) पाठ ३ नियम ५ —— वार लागे छे ।

(१२) —— प्रत्यय पर छतां —— शब्द नो ऋ विकल्पे दीर्घ थाय छे.

प्र. ६ नीचेना वाक्योनो अन्वय करी अर्थ लखो । कोईपण - ३ — ७ मार्क्स

(१) मनासी वचासी काये पुण्यपीयूषपूर्णा- स्त्रिभुवनमुपकार- श्रेणीभि: प्रीणयन्त:
परगुणपरमाणून्पर्वतीकृत्य नित्यं, निजहृदि विकसन्त: सान्ती सन्त: कियन्त: ।

(२) निन्दन्तु नीति-निपुणा यदि वा स्तुवन्तु लक्ष्मी: समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा न्यायात्पथ: प्रविचलान्ती पदं न धीरा: ।

(३) अतिप्रियं बान्धव ! दर्शनं ते सुधाञ्जनं भावि कदास्मदक्ष्णो: ।
नीरागचेत्तोऽपी कदाचिदस्मान्स्मरिष्यासी प्रौढगुणाभिराम ! ॥

(४) द्वितीयस्यास्तृतीयाया नृपकीर्तेरमर्षण: ।
जगत्यास्मिन् द्वितीयस्मिंस्तृतीये चैष विश्रुत: ॥

४४ + २ शुद्धिना

कुल ९० मार्क्स